RNI No.: RJHIN/26/A5495
Mob.:9352862449, 8058314720

निष्पक्ष निर्भीक जनहितकारी पत्रकारिता

www.brahmoskanayasavera.com
E-mail : brahmoskanayaserver@gmail.com

ब्रह्मोस का नया सवेरा

हम बनेंगे जनता की आवाज

वर्ष - 01 | अंक - 2 | जयपुर,गुरुवार, 2 जुलाई 2026 | कुल पृष्ठः 4 | BrahmoskaNayaSavera

प्रस्तावित टाइगर रिजर्व के विरोध में तीन जिलों का आंदोलन तेज

बांध बरेठा इको-सेंसिटिव जोन और करौली, धौलपुर तथा भरतपुर के सीमावर्ती क्षेत्र में प्रस्तावित टाइगर रिजर्व के विरोध में ग्रामीणों का आंदोलन लगातार तेज होता जा रहा है। आंदोलनकारी अब इस मुद्दे को लेकर बड़े जनआंदोलन की तैयारी में जुट गए हैं। इसी क्रम में 13 जुलाई को मरधई में महापंचायत आयोजित की जाएगी, जिसमें तीनों जिलों के हजारों ग्रामीणों के शामिल होने की संभावना है। ग्रामीणों का आरोप है कि राज्य सरकार उनकी सहमति के बिना टाइगर रिजर्व और वन्यजीव अभयारण्य के विस्तार की प्रक्रिया आगे बढ़ा रही है, जिससे बड़ी संख्या में गांवों के अस्तित्व पर संकट खड़ा हो सकता है।

आंदोलनकारियों का कहना है कि यदि सरकार टाइगर संरक्षण के लिए कोई कदम उठाना चाहती है तो केवल बांध बरेठा क्षेत्र को ही टाइगर रिजर्व या वन्यजीव अभयारण्य के रूप में विकसित किया जाए। उनका आग्रह है कि आबादी वाले गांवों और कृषि क्षेत्रों को प्रस्तावित दायरे से बाहर रखा जाए।आंदोलन से जुड़े राजू नावर ने बताया कि प्रस्तावित विस्तार से करीब 120 गांव प्रभावित होंगे, जहां लगभग एक से डेढ़ लाख लोग निवास करते हैं। उनका दावा है कि इन गांवों में 36 समाजों के लोग रहते हैं और सभी ने एकजुट होकर प्रस्ताव का विरोध करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि अब तक कई पंचायतें और महापंचायतें आयोजित की जा चुकी हैं, जिनमें ग्रामीणों ने स्पष्ट किया है कि वे किसी भी स्थिति में अपनी जमीन और गांव नहीं छोड़ेंगे।ग्रामीणों का कहना है कि टाइगर रिजर्व के विस्तार से किसानों की कृषि भूमि, आजीविका और सामाजिक जीवन पर गंभीर असर पड़ेगा। खेती और पशुपालन उनकी आय का मुख्य स्रोत है और यदि विस्थापन हुआ तो हजारों परिवारों के सामने रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो जाएगा। राजू नावर ने आरोप लगाया कि वन विभाग ने क्षेत्र में %केपी-3% नामक टाइगर छोड़ा है, जिससे ग्रामीणों में भय का माहौल बन गया है। हालांकि इस दावे पर वन विभाग की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि सरकार ने उनकी मांगों की अनदेखी करते हुए टाइगर रिजर्व विस्तार की प्रक्रिया आगे बढ़ाई तो आंदोलन को और व्यापक किया जाएगा।

बेटियों की शिक्षा के लिए दान की बेशकीमती जमीन

जायल तहसील के खिंयाला गांव निवासी स्वर्गीय हरिकिशन बिडियासर के पुत्र गणपतराम बिडियासर, मोहनराम बिडियासर, चेनाराम बिडियासर और अशोक कुमार बिडियासर को बालिका शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए राजस्थान सरकार ने प्रतिष्ठित %शिक्षा भूषण सम्मान% से सम्मानित किया है।

बिडियासर परिवार ने अपनी बेशकीमती भूमि राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, खिंयाला को दान देकर बालिका शिक्षा को नई दिशा देने का कार्य किया है। इस भूमि दान से विद्यालय के विस्तार, आधारभूत सुविधाओं के विकास तथा अधिक छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण मदद मिलेगी। जयपुर के ऐतिहासिक बिड़ला

ऑडिटोरियम में आयोजित 30वें राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह में यह सम्मान प्रदान किया गया। समारोह में उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा, शिक्षा एवं पंचायतीराज मंत्री मदन दिलावर तथा प्रारंभिक शिक्षा विभाग के निदेशक सीताराम जाट ने गणपतराम बिडियासर को स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र, शॉल और श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया। इससे पहले प्रारंभिक शिक्षा एवं पंचायतीराज विभाग के निदेशक सीताराम जाट ने 15 जून को जारी आमंत्रण पत्र के माध्यम से गणपतराम बिडियासर को समारोह में आमंत्रित किया था। सम्मान ग्रहण करने वे अपनी पुत्री के साथ जयपुर पहुंचे।सम्मान प्राप्त करने के बाद गणपतराम बिडियासर ने कहा कि यह सम्मान पूरे परिवार को समर्पित है। उन्होंने कहा कि बालिकाओं की शिक्षा ही समाज का भविष्य उज्ज्वल बना सकती है। यदि हमारी भूमि दान की छोटी-सी पहल से अन्य लोग भी प्रेरित होकर शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दें, तो यही हमारे लिए सबसे बड़ा सम्मान होगा। इस सम्मान से खिंयाला सहित पूरे जायल क्षेत्र में खुशी और गर्व का माहौल है। स्थानीय जनप्रतिनिधियों, शिक्षकों, विद्यार्थियों और समाजसेवियों ने बिडियासर परिवार के इस प्रेरणादायी योगदान की सराहना करते हुए इसे समाज के लिए अनुकरणीय पहल बताया। उल्लेखनीय है कि भामाशाह सम्मान राजस्थान सरकार द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक कल्याण और जनहित के कार्यों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं को प्रदान किया जाता है। बिडियासर परिवार की यह पहल बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने की दिशा में एक प्रेरक उदाहरण बनकर सामने आई है।

दौसा बस हादसे ने ताजा किए पुराने जख्म, दो साल में 4 बड़े अग्निकांडों से दहला राजस्थान

1 जुलाई 2026

16 अक्टूबर 2025,

दौसा में बुधवार तड़के हुए भीषण बस हादसे में आठ लोगों की मौत ने एक बार फिर पूरे राजस्थान को झकझोर दिया है। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर बस और ट्रक की टक्कर के बाद लगी आग में कई यात्रियों की जान चली गई। इस हादसे ने प्रदेश में पिछले 4 साल के दौरान हुए उन दर्दनाक सड़क अग्निकांडों की यादें ताजा कर दी हैं, जिनमें दर्जनों लोग जिंदा जल गए थे।

भांकरोटा गैस टैंकर हादसा-

हाईवे पर मचा था मौत का तांडव

20 दिसंबर 2024, शुक्रवार की सुबह करीब 5:45 बजे जयपुर-अजमेर राष्ट्रीय राजमार्ग पर भांकरोटा के पास एलपीजी गैस से भरे टैंकर और एक अन्य वाहन की टक्कर ने पूरे प्रदेश को दहला दिया था। टक्कर के बाद हुए विस्फोट से आग ने विकराल रूप ले लिया और आसपास गुजर रहे कई वाहन उसकी चपेट में आ गए। कई लोग अपने वाहनों में ही फंस गए और बाहर निकलने का मौका तक नहीं मिला। इस भीषण हादसे में 20 लोगों की मौत हुई थी। आज भी भांकरोटा हादसा राजस्थान के सबसे भयावह सड़क हादसों में गिना जाता है।

जैसलमेर बस अग्निकांड-

कुछ मिनटों में राख हो गई पूरी बस

भांकरोटा हादसे के जख्म अभी भरे भी नहीं थे कि 14 अक्टूबर 2025, मंगलवार को जैसलमेर-जोधपुर हाईवे पर थैयात गांव के पास एक और बड़ा अग्निकांड हो गया। दोपहर करीब 3:30 बजे जैसलमेर से जोधपुर जा रही निजी एसी स्लीपर बस में अचानक आग लग गई। आग इतनी तेजी से फैली कि कई यात्रियों को बाहर निकलने का मौका नहीं मिला। इस हादसे में 21 से अधिक यात्रियों की जिंदा जलकर मौत हो गई थी। बाद की जांच में बस की बॉडी निर्माण और सुरक्षा व्यवस्थाओं में गंभीर खामियां सामने आई थीं।

बालोतरा में स्कॉर्पियो बनी चार दोस्तों की चिता

जैसलमेर हादसे के महज दो दिन बाद, 16 अक्टूबर 2025 को तड़के करीब 1:30 बजे बालोतरा जिले के सिंधरी क्षेत्र में एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ। स्कॉर्पियो और ट्रेलर की टक्कर के बाद वाहन में आग लग गई। स्कॉर्पियो में सवार चार दोस्त बाहर नहीं निकल सके और जिंदा जल गए। हादसा इतना भयावह था कि शवों की पहचान करना भी मुश्किल हो गया था।

अब दौसा में फिर दोहराया दर्दनाक मंजर

अब दौसा में हुए ताजा बस अग्निकांड ने एक बार फिर सड़क सुरक्षा और वाहनों में आग लगने की घटनाओं को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। पिछले डेढ़ साल में राजस्थान ने कई ऐसे हादसे देखे हैं, जिनमें सड़क पर दौड़ते वाहन कुछ ही मिनटों में लोगों की चिता बन गए। भांकरोटा, जैसलमेर, बालोतरा और अब दौसा-इन घटनाओं ने यह संकेत दिया है कि सड़क हादसों के बाद लगने वाली आग यात्रियों के लिए सबसे बड़ा खतरा बनती जा रही है।

2 साल में राजस्थान का चौथा बड़ा अग्निकांड

20 दिसंबर 2024, भांकरोटा (जयपुर)
एलपीजी टैंकर विस्फोट के बाद लगी आग में 20 लोगों की मौत।

14 अक्टूबर 2025, जैसलमेर-
एसी स्लीपर बस में आग लगने से 21 से अधिक यात्री जिंदा जले।

16 अक्टूबर 2025, बालोतरा-
ट्रेलर से टकराने के बाद स्कॉर्पियो में आग लगी, चार दोस्तों की मौत।

1 जुलाई 2026, दौसा-
दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर बस में आग लगने से आठ यात्रियों की मौत।

बेटे की मौत का सदमा नहीं सह सकीं मां...

जिले की ग्राम पंचायत कालीखाड़ की कुआं दांगड़ा ढाणी में मां-बेटे के अटूट रिश्ते की ऐसी मार्मिक घटना सामने आई, जिसने पूरे क्षेत्र को गमगीन कर दिया। बेटे की मौत की खबर सुनते ही 70 वर्षीय कजोड़ी देवी को गहरा सदमा लगा और महज आधे घंटे बाद उन्होंने भी दम तोड़ दिया। कुछ ही देर के अंतराल में मां और बेटे की मौत से पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई। दोनों का एक साथ अंतिम संस्कार किया गया। घर से श्मशान घाट तक निकली संयुक्त शवयात्रा में हर आंख नम थी और हर कोई मां-बेटे के अटूट प्रेम की चर्चा करता नजर आया। जानकारी के अनुसार, कुआं दांगड़ा ढाणी निवासी 46 वर्षीय हरिराम मीणा सोमवार शाम करीब 8 बजे दौसा से स्कूटी पर अपने गांव लौट रहे थे। इसी दौरान ठीकरिया मोड़ के पास किसी अज्ञात वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें तत्काल दौसा जिला अस्पताल ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर हालत को देखते हुए जयपुर के एसएमएस अस्पताल रेफर किया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। मंगलवार सुबह जब हरिराम की मौत की सूचना उनकी मां कजोड़ी देवी को दी गई तो वे यह आघात सहन नहीं कर सकीं। बेटे के निधन का दुख उनके लिए असहनीय साबित हुआ और करीब आधे घंटे बाद उन्होंने भी अंतिम सांस ले ली।

पहले भी झेल चुकी थीं पुत्र वियोग

ग्रामीणों के अनुसार, कजोड़ी देवी पहले भी पुत्र वियोग का दर्द झेल चुकी थीं। उनके चार बेटों में से हरिराम दूसरे नंबर पर थे। तीसरे नंबर के बेटे हीरालाल की वर्ष 2001 में मात्र 20 वर्ष की आयु में असामयिक मृत्यु हो गई थी। वर्षों पुराना वह घाव अभी पूरी तरह भरा भी नहीं था कि दूसरे बेटे की मौत ने उन्हें पूरी तरह तोड़ दिया। हरिराम एक हाथ से दिव्यांग थे, लेकिन मेहनत-मजदूरी कर अपने बच्चों की पढ़ाई का खर्च उठा रहे थे। उनकी इच्छा थी कि बच्चे पढ़-लिखकर सरकारी नौकरी करें। उनकी बेटियों को अच्छे अंक लाने पर सरकार की ओर से स्कूटी भी मिली थी। परिवार की आजीविका मुख्य रूप से खेती-बाड़ी पर निर्भर है और आर्थिक स्थिति भी मजबूत नहीं है। हरिराम का पार्थिव शरीर गांव पहुंचने का इंतजार किया जा रहा था। अंतिम संस्कार की तैयारियों के बीच जैसे ही उनकी मां के निधन की खबर फैली, पूरे गांव में मातम छा गया। हरिराम का शव गांव पहुंचते ही उनकी पत्नी, बेटियां, इकलौते बेटे और भाई बिलख पड़े। मां और बेटे की संयुक्त अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में ग्रामीण और आसपास के लोग शामिल हुए तथा शोकाकुल परिवार को सांत्वना दी।

काश जन्म लेते ही मर जाता,जगन हत्याकांड के आरोपी के पिता बोले- अब न जेल जाऊंगा...

अजमेर हाई सिक्योरिटी जेल में कुख्यात डकैत जगन गुर्जर की हत्या के आरोपी और कुलदीप जघीना हत्याकांड के मुख्य आरोपियों में शामिल विष्णु अजान के पिता रामबाबू सिंह का दर्द आखिरकार छलक पड़ा। बेटे के लगातार आपराधिक मामलों में नाम आने से आहत पिता ने कहा, ÷जैसा करेगा, वैसा भरेगा। काश जन्म लेते ही मर जाता तो सिर्फ मलाल होता, लेकिन आज उसने पूरे परिवार को समाज के सामने शर्मिंदा कर दिया। अब न उससे मिलने जेल जाऊंगा और न ही उसके लिए कोई वकील करूंगा। हमारा उससे अब कोई संबंध नहीं है।÷

रामबाबू सिंह ने बताया कि उन्हें कभी अंदाजा नहीं था कि जिस बेटे के जन्म पर परिवार ने खुशियां मनाई थीं, वही बड़ा होकर अपराध की दुनिया में चला जाएगा। उन्होंने कहा कि बचपन से ही विष्णु गलत संगत में पड़ गया था। परिवार के सभी लोगों ने उसे समझाने की कोशिश की, यहां तक कि गांव के सरपंच ने भी कई बार समझाया, लेकिन उसने किसी की बात नहीं मानी। उन्होंने बताया कि विष्णु गांव से मजदूरी करने की बात कहकर भरतपुर जाता था लेकिन वहां अपराधियों की संगत में पड़ गया। वर्ष 2023 में वे एक बार उससे जेल में मिलने भी गए थे। उस समय विष्णु ने अपराध का रास्ता छोड़ने का वादा किया था लेकिन जेल से बाहर आने के बाद वह फिर गंभीर आपराधिक गतिविधियों में शामिल हो गया।आर्थिक तंगी में गुजर रहा परिवार,

रामबाबू सिंह ने बताया कि परिवार की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर है। वे और उनके बड़े भाई दयाराम राजमिस्त्री का काम करते हैं, जबकि विष्णु के दोनों भाई मजदूरी कर परिवार का भरण-पोषण करते हैं। परिवार के पास केवल एक बीघा कृषि भूमि है और रोजमर्रा का खर्च मजदूरी से चलता है। ग्रामीणों के अनुसार कई बार परिवार को रोज का आटा भी खरीदकर लाना पड़ता है।

धान की फसल बचाने के लिए सड़क पर उतरे अन्नदाता

नहरी पानी की मांग को लेकर किसानों का महापड़ाव

धान की सूखती फसल को बचाने के लिए नहरी पानी छोड़ने की मांग को लेकर जिले के केशोरायपाटन क्षेत्र में किसानों का आक्रोश खुलकर सामने आया। केशोरायपाटन शुगर मिल संयुक्त किसान समन्वय समिति के आह्वान पर बड़ी संख्या में किसान गुडला टोल प्लाजा पर एकत्रित हुए और महापड़ाव शुरू कर दिया। किसान दिनभर मेगा हाईवे पर डटे रहे तथा धरना स्थल पर ही भोजन की व्यवस्था कर रात तक आंदोलन जारी रखा। किसानों ने नहरों में तत्काल पानी छोड़ने की मांग की।

इस दौरान कई बार सीएडी विभाग और प्रशासनिक अधिकारियों ने किसानों से वार्ता की लेकिन कोई ठोस आश्वासन नहीं मिलने पर किसान अपनी मांगों पर कायम रहे। उपखंड अधिकारी ने शीर्ष अधिकारियों से चर्चा के बाद किसानों को बताया कि संभागीय आयुक्त का अतिरिक्त प्रभार संभाल रहे कोटा कलेक्टर से वार्ता कर किसानों के हित में सकारात्मक निर्णय लेने का प्रयास किया जाएगा।

धरने को संबोधित करते हुए युवा किसान नेता गिर्राज गौतम ने कहा कि नहरी पानी पर किसानों का पहला अधिकार है। उन्होंने आरोप

लगाया कि किसानों ने एक माह पहले ही प्रशासन को सिंचाई के लिए पानी की आवश्यकता से अवगत करा दिया था, लेकिन समय रहते कोई कार्रवाई नहीं की गई। इसका खामियाजा अब किसानों को भुगतना पड़ रहा है और धान की फसल सूखने लगी है।उन्होंने कहा कि पिछले तीन वर्षों से किसानों को हर बार नहरी पानी के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। पिछले वर्ष एक जुलाई तक नहरों में पानी छोड़ दिया गया था लेकिन इस बार अब तक पानी नहीं मिलने से किसानों की चिंता बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि किसान अपनी मेहनत से तैयार की गई फसल को किसी भी कीमत पर बर्बाद नहीं होने देंगे।

किसान नेताओं ने प्रशासन से जल्द से जल्द नहरों में पानी छोड़ने का निर्णय लेने की मांग की। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि प्रशासन के साथ होने वाली वार्ता में किसानों के पक्ष में निर्णय नहीं लिया गया तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा तथा बड़े आंदोलन की घोषणा की जाएगी। किसानों ने स्पष्ट कहा कि फसल बचाने के लिए वे हर स्तर तक संघर्ष करने को तैयार हैं।

ओरछा के राजा की युक्ति बनी बाहुबली की युद्ध नीति

फिल्म निर्देशक एसएस राजामौली ने बाहुबली- द इटरनल वॉर नाम से एक 3डी एनिमेटेड फीचर फिल्म तैयार की है। जून माह में दिल्ली में आयोजित 'दिल्ली एनिमे इंडिया 2026' में इस फिल्म की कुछ झलकियां और विजुअल्स पेश किए गए थे, जिससे भारतीय फैंस के बीच फिल्म को लेकर उत्सुकता काफी बढ़ गई। दरअसल, इस फिल्म के कई दृश्य ऐसे हैं, जिन्हें भुलाना कठिन है। ऐसे ही एक दृश्य का नाता भारतीय युद्ध नीति से बताया जाता है। दृश्य है-जब पिंडारियों के हमले से कुंतला राज्य को बचाने के लिए बाहुबली बैलों के सींगों पर जलती मशालें बांध देते हैं और उन्हें दौड़ाकर हमलावरों से राज्य की रक्षा करते हैं। फिल्म समीक्षकों ने माना कि इस युद्ध नीति को हॉलीवुड की फिल्मों से नहीं, बल्कि प्राचीन चीनी सैन्य इतिहास से लिया गया। इसे 'फायर कैटल कैवेलरी' कहा जाता है। नेटफ्लिक्स की सीरीज मार्को पोलो (2014) में भी इसी तरह का दृश्य है। भारतीय युद्ध नीतियों में भी इस सीन का हूबहू जिक्र है। सन 1573 में अकबर की सेना सलीम को पकड़ने के उद्देश्य से ओरछा रियासत पर चढ़ाई करने पहुंची। बुंदेला के दरबारी वीर मैत्रेय इस पूरे वाकये का जिक्र अपनी पुस्तक प्रतिष्ठा प्रकाश में करते हैं। हमले की भनक लगने पर ओरछा राजा मधुकर बुंदेला ने रात को इस अनोखी युक्ति से काम किया। रात के समय जब अकबर की सेना विश्राम कर रही थी, तभी ओरछा के राजा ने बड़ी संख्या में मवेशियों के सींगों पर जलती मशालें बंधवाकर उन्हें मुगल सैनिकों के पड़ाव की ओर दौड़ा दिया। निशाना सैनिकों का शस्त्र भंडार था। अकबर की सेना अचानक इस तरह से हुए हमले को समझ ही नहीं पाई। काफी सैनिक एक-दूसरे पर ही तलवारें लेकर टूट पड़े और कुछ मवेशियों से हताहत हो गए। जलती मशालों के साथ मवेशी शस्त्रागार में जा घुसे, जिससे वहां भीषण आग लग गई। सारा गोला बारूद जल गया और उसके विस्फोट की चपेट में आकर अकबर की सेना पूरी तरह से पस्त हो गई। ओरछा राजा की इस युक्ति का लोहा अकबर भी मान गया। बाद में उसने ओरछा राजा से समझौता किया और सलीम की जान बख्शने की शर्त के साथ ही सलीम को लौटाया गया। इसी घटना के बाद ओरछा राजा मधुकर बुंदेला के पुत्र वीर सिंह बुंदेला ने मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर भव्य मंदिर बनवाने का मार्ग तैयार किया और बाद में यहां शानदार मंदिर बना।

आज इधर, कल उधर! 4 मई के बाद 180 डिग्री बदल गए ये 10 राजनीतिक रिश्ते

संयुक्त परिवारों में रिश्तों के बनने-बिगड़ने की कहानियां अक्सर टीवी सिरियल्स में देखने को मिलती हैं, लेकिन पश्चिम बंगाल की राजनीति में 4 मई के बाद जो कुछ हुआ, वह किसी पॉलिटिकल ड्रामा से कम नहीं है। कोई कभी %भाई% था, कोई %बहन%, कोई %दोस्त%- लेकिन अब वे रिश्ते अतीत बन चुके हैं। वहीं कुछ धुर विरोधियों के बीच दूरियां कम होती दिखाई दे रही हैं। तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ममता बनर्जी हमेशा पार्टी को अपना ÷परिवार÷ कहती रही हैं। लेकिन समय के साथ इसी परिवार पर ÷परिवारवाद÷ का आरोप लगने लगा। पहले भी मतभेद थे, लेकिन उन्हें संभाल लिया जाता था। सियासी घटनाक्रम ने समीकरण ऐसे बदले कि अपने ही दल के कई करीबी नेताओं के बीच दूरियां बढ़ गईं, वहीं कल तक एक-दूसरे के धुर विरोधी रहे नेता अब साथ-साथ कदम बढ़ाते दिख रहे हैं। मुकुल रॉय, शोभन चटर्जी और पार्थ चटर्जी के सक्रिय राजनीति से दूर होने के बाद फिरहाद हकीम (बॉबी) ममता बनर्जी के सबसे भरोसेमंद नेताओं में गिने जाते थे। ममता बनर्जी उनके हर प्रमुख कार्यक्रम में शामिल होती थीं और बॉबी भी भवानीपुर में रहकर उनके चुनाव अभियान का नेतृत्व करते थे। वह अक्सर कहते थे कि राजनीति में जो कुछ भी हैं, ममता बनर्जी की बदौलत हैं। 4 मई तक यही तस्वीर थी। लेकिन उसके बाद हालात तेजी से बदल गए। पहले उनकी बेटी प्रियदर्शिनी हकीम ने सोशल मीडिया पर संकेतपूर्ण पोस्ट किया। फिर बॉबी ने ममता बनर्जी को बताए बिना नवान्न की बैठक में हिस्सा लिया, शुभेंदु अधिकारी के कार्यक्रम में पहुंचे, ऋतोब्रत बंद्योपाध्याय से मुलाकात की और अंततः ममता बनर्जी से अलग बने नए तृणमूल संगठन में शामिल हो गए।

2. ममता बनर्जी-कजरी बंद्योपाध्याय

कजरी बंद्योपाध्याय, जो ममता बनर्जी की रिश्तेदार (भाभी) हैं, लंबे समय तक उनके बेहद करीबी मानी जाती थीं। भवानीपुर उपचुनाव में वह ममता बनर्जी की चुनाव एजेंट भी थीं और मीडिया के सामने लगातार उनका पक्ष रखती थीं। लेकिन 4 मई के बाद परिवार के भीतर भी राजनीतिक विभाजन दिखाई दिया। कजरी बंद्योपाध्याय, शुभेंदु अधिकारी के कार्यक्रम में पहुंचीं और मुख्यमंत्री की प्रशंसा भी की।

3. ममता बनर्जी-काकोली घोष दस्तीदार

काकोली घोष दस्तीदार और ममता बनर्जी का संबंध चार दशक पुराना माना जाता था। कठिन समय में काकोली घोष दस्तीदार और उनके परिवार ने ममता बनर्जी का साथ दिया था। बदले में ममता बनर्जी ने उन्हें और उनके पति को कई बार चुनावी टिकट और राजनीतिक जिम्मेदारियां दीं। लेकिन 4 मई के बाद यह रिश्ता भी पूरी तरह बदल गया। हालात यहां तक पहुंच गए कि काकोली घोष दस्तीदार के बेटे ने ममता बनर्जी द्वारा दिया गया उपहार वापस करने के लिए सीधे कालीघाट जाकर उसे लौटा दिया।

4. ममता बनर्जी-दीपक अधिकारी(देव)

अभिनेता और सांसद दीपक अधिकारी (देव) को राजनीति में बनाए रखने का श्रेय काफी हद तक ममता बनर्जी को दिया जाता रहा है। घाटाल मास्टर प्लान के लिए राज्य सरकार द्वारा धन आवंटित किए जाने का श्रेय भी देव अक्सर ममता बनर्जी को देते थे। जनवरी में उन्होंने सार्वजनिक रूप से उनका धन्यवाद भी किया था। लेकिन 4 मई के बाद उन्होंने नया राजनीतिक रुख अपनाया। उनके हस्ताक्षर नए राजनीतिक घटनाक्रम से जुड़े दस्तावेजों में दिखाई दिए, जिससे उनके और ममता बनर्जी के रिश्तों में आई दूरी साफ नजर आने लगी।

5. ममता बनर्जी-रचना बनर्जी

लोकसभा चुनाव से पहले अभिनेत्री रचना बनर्जी, ममता बनर्जी के साथ मंच साझा करती थीं। ममता बनर्जी ने उनके साथ सार्वजनिक कार्यक्रमों में हिस्सा लिया और उन्हें चुनावी टिकट भी दिलाया। लेकिन 4 मई के बाद रचना बनर्जी ने कहा कि ममता सरकार के दौरान वह अपने संसदीय क्षेत्र में कोई काम नहीं कर सकीं। इस बयान ने दोनों के रिश्तों में आई दूरी को सार्वजनिक कर दिया। पांच अहम राजनीतिक रिश्तों के बाद अब बात पांच अन्य राजनीतिक समीकरणों की

6. अभिषेक बनर्जी-ऋतोब्रत बंद्योपाध्याय

एक समय ऋतोब्रत बंद्योपाध्याय सार्वजनिक मंचों से कहते थे कि बंगाल में महाराष्ट्र जैसी स्थिति नहीं होगी और उनके नेता अभिषेक बनर्जी हैं। लेकिन अब वही ऋतोब्रत बंदोपाध्याय, अभिषेक बनर्जी पर तीखे हमले कर रहे हैं और उन्हें व्यंग्य में ÷चार्टर्ड अभिषेक÷ कहकर संबोधित करते हैं। दोनों के रिश्तों में पूरी तरह दरार आ चुकी है।

7. महुआ मोइत्रा-कल्याण बनर्जी

अगस्त 2025 में महुआ मोइत्रा और कल्याण बनर्जी के बीच तीखी बयानबाजी हुई थी। कल्याण बनर्जी ने महुआ मोइत्रा के पहनावे तक पर टिप्पणी की थी, जबकि महुआ मोइत्रा ने उन्हें महिला विरोधी बताया था। लेकिन 4 मई के बाद तस्वीर पूरी तरह बदल गई। अब महुआ मोइत्रा उन्हें ÷बहुत भावुक इंसान÷ बताती हैं। दोनों की राजनीतिक लाइन एक जैसी हो गई है और वे एक साथ दिखाई देने लगे हैं।

8. महुआ मोइत्रा-सायनी घोष

महुआ मोइत्रा और सायनी घोष को लंबे समय तक तृणमूल कांग्रेस की मजबूत जोड़ी माना जाता था। संसद से लेकर चुनाव प्रचार तक दोनों साथ दिखाई देती थीं। महुआ मोइत्रा को सायनी घोष पर पूरा भरोसा था। लेकिन 4 मई के बाद अचानक सायनी घोष कुछ समय के लिए सार्वजनिक जीवन से दूर हो गईं। बाद में नए राजनीतिक घटनाक्रम में शामिल होने के बाद उन्होंने अलग रास्ता चुन लिया। महुआ मोइत्रा ने इसे व्यक्तिगत रूप से भी बड़ा आघात बताया।

9. रचना बनर्जी-असित मजूमदार

4 मई से पहले हुगली में सांसद रचना बनर्जी और विधायक असित मजूमदार के बीच गंभीर मतभेद थे। मामला इतना बढ़ा कि कल्याण बनर्जी को बीच-बचाव करना पड़ा। लेकिन चुनाव परिणाम के बाद जब असित मजूमदार गिरफ्तार हुए तो रचना बनर्जी उनसे मिलने पहुंचीं। बाद में उन्होंने भी फिर एकबार अलग राजनीतिक खेमे का रुख कर लिया।

10. शताब्दी रॉय-अनुब्रत मंडल

बीरभूम जिले में अनुब्रत मंडल और सांसद शताब्दी रॉय के बीच लंबे समय तक तनाव रहा। ममता बनर्जी भी कई बार इस विवाद का जिक्र कर चुकी थीं। लेकिन सत्ता परिवर्तन के बाद दोनों की राजनीतिक भाषा एक जैसी हो गई। दोनों अब ममता बनर्जी और अभिषेक बनर्जी के नेतृत्व की आलोचना करते हुए एक ही सुर में बोल रहे हैं। बहरहाल,कुल मिलाकर 4 मई के बाद पश्चिम बंगाल की राजनीति में रिश्तों की नई तस्वीर सामने आई है। जहां वर्षों पुराने विश्वास और नजदीकियां टूट गईं, वहीं कई पुराने विरोधी एक मंच पर आ गए। यह बदलाव केवल राजनीतिक समीकरणों का नहीं, बल्कि व्यक्तिगत संबंधों के बदलते स्वरूप का भी संकेत देता है।

जीवन धारा- जीवन का अर्थ संग्रह में नहीं, लय में है; सूत्र- सहज बनें

मनुष्य ने अपने चारों ओर जितनी भी दीवारें खड़ी कर ली हों, उसकी आत्मा अब भी प्रकृति की संतान है। वह नगरों-महानगरों में रह सकता है, पत्थरों के बीच जीवन बिता सकता है, अपने जीवन को महत्वाकांक्षा और शोर से भर सकता है, पर उसके भीतर कहीं न कहीं एक मौन स्मृति भी जरूर जीवित रहती है। यह मौन स्मृति खुले आकाश की, बहती हुई हवा की या किसी नदी के किनारे की शांति की होती है। शायद यही कारण है कि जब जीवन बेहद मुश्किल और कृत्रिम लगने लगता है, तब मनुष्य अनायास ही प्रकृति की ओर लौटने को बेचैन हो उठता है, जैसे थका हुआ बच्चा अंततः अपनी मां की गोद में लौट आता है। प्रकृति संसार की सबसे प्राचीन व सबसे धैर्यवान शिक्षक है। वह उपदेश या आदेश नहीं देती, सिर्फ मौजूद रहती है। उसकी यही मौन उपस्थिति मनुष्य के भीतर ऐसा बदलाव ला सकती है, जो हजारों शब्द भी नहीं कर पाते। जब मैं किसी जंगल से गुजरती हूं, तो ऐसा लगता है, मानो पृथ्वी स्वयं धीरे-धीरे सांस ले रही हो। पेड़ों की शाखाएं हवा में जिस तरह से हिलती हैं, तब उनमें कोई उतावलापन नहीं होता। वे आकाश तक पहुंचने की आकांक्षा भी रखती हैं, पर साथ ही अपनी जड़ों को भी गहराई तक फैलाए रखती हैं। मनुष्य भी यदि प्रकृति से कुछ सीखना चाहे, तो शायद यही सबसे पहली शिक्षा होगी कि ऊंचा उठने की इच्छा रखो, पर अपनी जड़ों को मत भूलो। शहरों में लोग एक-दूसरे के करीब तो रहते हैं, पर आत्माएं दूर होती जाती हैं। हर व्यक्ति स्वयं को सिद्ध करने में लगा रहता है। हर चेहरा किसी भूमिका का अभिनय करता हुआ नजर आता है। प्रकृति इन सब कृत्रिमताओं को धो देती है। प्रकृति में कोई पाखंड नहीं है। फूल इसलिए नहीं खिलते कि कोई उनकी प्रशंसा करे। केवल मनुष्य ही है, जो निरंतर अपने अस्तित्व का प्रदर्शन करता रहता है। शायद इसी कारण प्रकृति के बीच मनुष्य का हृदय अधिक सरल हो जाता है। वहां उसे किसी मुखौटे की जरूरत नहीं रह जाती। प्रकृति सिखाती है कि जीवन का अर्थ संग्रह में नहीं, लय में है। ऋतुओं को देखिए। वसंत आकर चला जाता है। ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा ठंडक देती है। पतझड़ पेड़ों को खाली कर देता है और शीत ऋतु सब कुछ स्थिर कर देती है। पर, प्रकृति कभी निराश नहीं होती। उसे पता है कि हर अंत में एक आरंभ छिपा है। मनुष्य यदि यह एक शिक्षा भी सीख ले, तो उसका आधा दुख समाप्त हो जाए। प्रकृति हमें प्रेम का अर्थ भी सिखाती है। प्रेम अधिकार नहीं है, जैसे सूर्य फूलों पर अधिकार नहीं जमाता। वह केवल उन्हें प्रकाश देता है। सच्चा प्रेम भी ऐसा ही होता है, वह दूसरे को खिलने देता है। जब जीवन कठोर लगने लगे, जब संसार का शोर आपकी आत्मा को थका दे, तब कुछ समय प्रकृति के पास जाइए। पेड़ की छाया में बैठिए, मिट्टी की गंध महसूस कीजिए, हवा को अपने चेहरे पर बहने दीजिए। आप पाएंगे कि प्रकृति कोई उत्तर नहीं देती, फिर भी आपके भीतर के अनेक प्रश्न शांत हो जाते हैं। ऊंचाइयों को छूने की चाह जरूर रखें, पर अपनी जड़ों और सादगी को कभी न भूलें। ऋतुओं की तरह हर अंत में एक नई शुरुआत को देखना सीखें और संग्रह के बजाय जीवन को एक सुंदर लय में जिएं।

मुंबई की तटीय जैवविविधता का अनमोल आवास

मुंबई जैसे घनी आबादी वाले महानगर के बीच, सीवरी के कीचड़ तट एक ऐसे प्राकृतिक संसार का द्वार खोलते हैं जहाँ शहर की गति कुछ पल के लिए ज्वार की लय के आगे थम जाती है। दूर से देखने पर ये तट साधारण, कीचड़ से भरे और लगभग खाली लग सकते हैं, लेकिन वास्तव में ये अत्यंत समृद्ध और जीवंत तटीय आवास हैं, जो पक्षियों, सूक्ष्म जीवों और समुद्री जीवों की अनेक प्रजातियों को सहारा देते हैं। सीवरी के कीचड़ तटों की असली ताकत उनकी सूक्ष्म लेकिन बहुस्तरीय पारिस्थितिकी में छिपी है। यहाँ रहने वाले बेंथिक जीव जैसे पॉलीकीट, छोटे मोलस्क, क्रस्टेशियन और अन्य तल-निवासी जीव न केवल स्वयं इस आवास का हिस्सा हैं, बल्कि पक्षियों और मछलियों के लिए भोजन शृंखला की नींव भी बनते हैं। ज्वार के साथ आने-जाने वाला पानी पोषक तत्वों को बार-बार पुनर्वितरित करता है, जिससे यह क्षेत्र जैविक उत्पादन का एक सक्रिय केंद्र बन जाता है।

हर वर्ष सर्दियों के मौसम में सीवरी के ये तट हजारों प्रवासी फ्लेमिंगो पक्षियों के लिए सुरक्षित भोजन-स्थल बन जाते हैं। ये पक्षी अक्तूबर से मार्च के बीच यहां आते हैं और कम ज्वार के समय खुले हुए कीचड़ तटों पर भोजन करते हैं। इनके गुलाबी झुंड केवल देखने में सुंदर नहीं होते, बल्कि वे इस बात का संकेत भी हैं कि नीचे की तलछट में जीवन मौजूद है और भोजन की पर्याप्त उपलब्धता बनी हुई है। सीवरी के कीचड़ तटों की असली ताकत उनकी सूक्ष्म लेकिन बहुस्तरीय पारिस्थितिकी में छिपी है। यहां रहने वाले बेंथिक जीव जैसे पॉलीकीट, छोटे मोलस्क, क्रस्टेशियन और अन्य तल-निवासी जीव न केवल स्वयं इस आवास का हिस्सा हैं, बल्कि पक्षियों और मछलियों के लिए भोजन शृंखला की नींव भी बनते हैं। ज्वार के साथ आने-जाने वाला पानी पोषक तत्वों को बार-बार पुनर्वितरित करता है, जिससे यह क्षेत्र जैविक उत्पादन का एक सक्रिय केंद्र बन जाता है। इन कीचड़ तटों के साथ लगे मैंग्रोव वन इस पारिस्थितिकी को और मजबूत बनाते हैं। मैंग्रोव तटों को स्थिर रखते हैं, तलछट को बांधते हैं, प्रदूषकों को कुछ हद तक रोकते हैं और किशोर मछलियों तथा अकशेरुकी जीवों के लिए आश्रय का काम करते हैं। सीवरी क्षेत्र की यह मडफ्लैट-मैंग्रोव निरंतरता मुंबई के तटीय तंत्र को लहरों, बाढ़ और तटीय क्षरण जैसी चुनौतियों से बचाने में भी मदद करती है। लेकिन यह प्राकृतिक तंत्र दबाव में है। मुंबई में बढ़ता शहरीकरण, बंदरगाह गतिविधियां, परिवहन परियोजनाएं, प्रदूषण और कचरे का अनियंत्रित प्रवेश इन आवासों की गुणवत्ता को प्रभावित कर रहे हैं। कई रिपोर्टों ने सीवरी के मैंग्रोव क्षेत्र को संवेदनशील और पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण बताया है, फिर भी विकास परियोजनाओं के कारण इन पर जोखिम बना रहता है। जब तलछट की प्रकृति बदलती है या प्रदूषण बढ़ता है, तो सबसे पहले प्रभाव बेंथिक जीवों और फिर उन पर निर्भर पक्षियों पर दिखाई देता है। सीवरी हमें यह याद दिलाता है कि शहर और प्रकृति के बीच की रेखा उतनी कठोर नहीं होती जितनी हम मान लेते हैं। यहाँ कीचड़, ज्वार, मैंग्रोव और पक्षी मिलकर एक ऐसा तटीय संसार रचते हैं जो मुंबई की पर्यावरणीय सहनशीलता के लिए अनमोल है।

यदि हम इन तटों को केवल खाली जमीन समझकर नष्ट कर देंगे, तो हम सिर्फ एक पक्षी-स्थल नहीं खोएंगे, बल्कि शहर की प्राकृतिक रक्षा-व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी खो देंगे।

आखिर गर्मी में कैसे रहते थे पुरखे? कैसी थी गर्मी में जीने की भारतीय परंपरा

आज पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन, हीट वेव, सूखा, पानी के संकट और अनियमित वर्षा जैसी समस्याओं से जूझ रही है। इस समस्याओ का समाधान ढूंढने में लगे वैज्ञानिक और पर्यावरणविद क्लाइमेट एडाप्टेशन, नेचर बेस्ड सॉल्यूशन और सस्टेनेबल लिविंग जैसे नए सिद्धांत गढ़ रहे हैं। लेकिन जब हम थोड़ा पीछे मुड़कर देखते हैं तो भारत का लोकजीवन इन सिद्धांतों को सदियों पहले अपने त्योहारों, व्रतों, भोजन, खेती और सामाजिक व्यवहार आदि की परम्पराओं में प्रकृति के प्रति गहरे जुड़ाव को अपना हिस्सा बना चुका था।

हमारे लोक जीवन ने प्रकृति के चक्र को गहरे से समझा और मौसम को जीतने के बजाय ताल मेल के साथ जीना सीखा और व्यहार में उतारा। यही कारण है कि भारतीय पंचांग का प्रत्येक पर्व किसी न किसी ऋतु परिवर्तन से जुड़ा हुआ है, प्रत्येक रीति रिवाज प्रकृति के प्रति आस्था को समर्पित है। भारत में धर्म और प्रकृति कभी अलग-अलग नहीं रहे, प्रकृति की समझ ही धर्म का स्वरुप लेती गयी। सूर्य, चंद्रमा, नदियां, पोखर, पर्वत, पेड़ पौधे, वर्षा, आग और हवा यहां तक की धरती सभी पूजनीय रहे हैं। यह पूजा किसी अलौकिक भय से नहीं, बल्कि इस गहरे अनुभव से उपजी थी कि मनुष्य का अस्तित्व प्रकृति पर निर्भर है।

गर्मी की तपती दोपहर में जब धरती आग उगलने लगती है, लू के थपेड़े शरीर की नमी सोख लेते हैं और मानसून की पहली बूंदों की प्रतीक्षा में खेत, जंगल और मनुष्य समान रूप से व्याकुल हो उठते हैं, तब भारतीय लोकजीवन केवल मौसम को सहन नहीं करता, बल्कि उसके साथ संवाद करता है। यही संवाद हमारी लोक परंपराओं, व्रतों, पर्वों और रीति-रिवाजों में आधुनिकता के प्रचंड प्रवाह के बाबजूद आज भी दिखाई देता है।

पहली नजर में ये केवल धार्मिक आस्थाएं लग सकती हैं, किंतु इनके भीतर

मौसम, स्वास्थ्य, जल संरक्षण, खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण के गहरे वैज्ञानिक संकेत छिपे हुए हैं। आज जब जलवायु परिवर्तन के कारण गर्मी की अवधि लंबी होती जा रही है, हीट वेव सामान्य घटना बन चुकी है और वर्षा का चक्र अनिश्चित हो रहा है, तब इन परंपराओं को नए दृष्टिकोण से समझना समय की मांग है।

वैशाख और ज्येष्ठ की प्रचंड गर्मी के दौरान देश के अनेक हिस्सों में शिवलिंग पर निरंतर जल टपकता रहे इसके लिए मिट्टी का घड़ा (जलधारा) रखा जाता है। धार्मिक दृष्टि से इसे भगवान शिव का शीतल अभिषेक माना जाता है, लेकिन इसके पीछे प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता भी निहित है। मिट्टी के घड़े से बूंद-बूंद गिरता जल कहीं-न-कहीं हमारा ध्यान पानी का उपयोग संयम से किया जाए इस ओर ले जाता है। मिट्टी का घड़ा स्वयं जल को ठंडा रखता है और जल संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह परंपरा उस समय विकसित हुई होगी जब लोग जल के प्रत्येक कण का महत्व जानते थे।

इसी प्रकार निर्जला एकादशी के अवसर पर बास या ताड़ के पत्ते का पंखा, मिटटी का घड़ा या गिलास, चीनी या गुड शर्बत, चना सहित अन्य अनाज का मिला हुआ सत्तू, खीरा, आम, जल और अन्य शीतल वस्तुओं का दान करने की परंपरा आज भी जीवित है। ध्यान से देखे तो ये सारी वस्तुएं प्रचंड गर्मी से बचाव की तैयारी का हिस्सा है, जो गर्मी में किसी जरूरतमंद को दिए जाने की परम्परा के रूप में विकसित हुई होगी। निर्जला एकादशी हीट एक्शन प्लान का लोक संस्करण है। यह परंपरा केवल पुण्य कमाने का माध्यम नहीं थी यह समाज में यह संदेश देने का तरीका था कि भीषण गर्मी में शरीर को ठंडा रखने वाले खाद्य पदार्थ सभी तक पहुंचने चाहिए। जिन लोगों के पास संसाधन नहीं थे, वे भी इस सामुदायिक व्यवस्था से राहत पाते थे। आज जिसे हम ÷हीट एक्शन प्लान÷ कहते हैं, उसका सामाजिक स्वरूप हमारे गांवों में सदियों पहले मौजूद था। बिहार, झारखंड और पूर्वी भारत में मनाया जाने वाला जुड़ शीतल या शीतल पूजा भी इसी वैज्ञानिक सोच का विस्तार है। इस दिन रात में बना ठंडा भोजन, दही-चूड़ा, मीठा भात, आम, सत्तू और अन्य ठंढे तासीर वाला खाना खाया जाता हैं। घरों में पानी का छिड़काव किया जाता है, पेड़ों को सींचा जाता है और प्रकृति को शीतलता प्रदान करने का संदेश दिया जाता है। यह भोजन केवल स्वाद के लिए नहीं, बल्कि गर्मी में शरीर को संतुलित रखने वाला पारंपरिक पोषण विज्ञान है। दही शरीर में लाभकारी जीवाणुओं को बढ़ाता है, चूड़ा आसानी से पचता है, गुड़ खनिजों की पूर्ति करता है और आम त्वरित ऊर्जा का स्रोत है।

यह उत्सवधर्मिता केवल आध्यात्मिक संतोष तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बदलते मौसम के प्रति सामूहिक अनुकूलन का एक तरीका है। इसका सबसे सटीक प्रमाण चैत्र मास की समाप्ति पर मनाया जाने वाला %सतुआनी% पर्व है, जो सीधे तौर पर शरीर को प्रचंड गर्मी के लिए तैयार करने का त्यौहार है। इस दिन सामूहिक रूप से सत्तू, आम के टिकोले (कच्ची अमिया) की चटनी और घड़े के पानी का पिया जाता है। इसके ठीक बाद आने वाली %अक्षय तृतीया% (आखा तीज) पर मिट्टी के घड़े, सत्तू, जौ और खरबूजे के दान की परंपरा है। यह परंपरा केवल धार्मिक पुण्य कमाने का जरिया नहीं है, बल्कि समाज के हर वर्ग तक गर्मी से राहत देने वाले प्राकृतिक संसाधनों और शीतल भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित करने का एक अनूठा सामाजिक ढांचा है।

वट सावित्री व्रत के अवसर पर वटवृक्ष के नीचे पूजा करना और हाथ से पंखा झलना भी केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है। वटवृक्ष विशाल छाया देता है, आसपास का तापमान कम करता है और बड़ी मात्रा में नमी बनाए रखता है। पेड़ के नीचे बैठना स्वयं एक प्राकृतिक शीतलन प्रणाली है। पंखा झलने की परंपरा बताती है कि बिना ऊर्जा खर्च किए भी शरीर को ठंडक पहुंचाई जा सकती है। आज जब एयर कंडीशनर शहरों की गर्मी और बढ़ा रहे हैं, तब हाथ का पंखा और वृक्षों की छाया कहीं अधिक टिकाऊ समाधान प्रतीत होते हैं।

भारतीय समाज में मिट्टी के घड़े का पानी, सत्तू, बेल का शर्बत, आम का पना, दही, मट्ठा, लस्सी, जौ और चावल जैसे खाद्य पदार्थों का मौसमानुसार उपयोग भी इसी पर्यावरणीय समझ का परिणाम है। मौसम के अनुसार खान-पान की एक समृद्ध परम्परा की लोक समझ सम्पूर्ण भारत में किसी ना किसी रूप में अब भी देखने को मिल जाती हैं। इसी कड़ी में घाघ और भड्डरी की ये लोकोक्ति पोषण की आम समझ का आइना है और स्थानीय जलवायु के अनुरूप विकसित पोषण प्रणाली हैं।

दो वर्ष से फरार साइबर ठगी का आरोपी गिरफ्तार, बैंक खाता उपलब्ध कराकर करता था ठगी में सहयोग

सवाई माधोपुर। मानटाउन थाना पुलिस ने साइबर ठगी के एक मामले में दो वर्ष से फरार चल रहे आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी साइबर अपराधियों को अपना बैंक खाता उपलब्ध कराकर ठगी की रकम के लेन-देन में सहयोग करता था। उसके विरुद्ध न्यायालय से गिरफ्तारी वारंट भी जारी था।

पुलिस अधीक्षक जेष्ठा मैत्रेयी के निर्देशन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विजयसिंह तथा पुलिस उपाधीक्षक शहर जयप्रकाश अटल के सुपरविजन में थानाधिकारी सुनील कुमार गुप्ता के नेतृत्व में यह कार्रवाई की गई।

गिरफ्तार आरोपी लोकेश पुत्र टीकाराम मीणा (22) निवासी बलरिया, थाना चौथ का बरवाड़ा है। पुलिस के अनुसार आरोपी साइबर अपराधियों को अपना बैंक खाता उपलब्ध कराता था तथा इसके बदले कमीशन प्राप्त करता था। उसके खाते का उपयोग साइबर ठगी से प्राप्त धनराशि के संग्रहण एवं हस्तांतरण (म्यूल अकाउंट) के रूप में किया जाता था।

जांच में सामने आया कि साइबर ठग टेलीग्राम, व्हाट्सएप, फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर फर्जी प्रोफाइल बनाकर स्वयं को शेयर ट्रेडिंग और निवेश विशेषज्ञ बताते थे। इसके बाद फर्जी स्क्रीनशॉट और नकली ट्रेडिंग रिपोर्ट दिखाकर अधिक मुनाफे का लालच देकर लोगों से निवेश, ट्रेडिंग, मैच प्रिडिक्शन, सट्टा सहित विभिन्न योजनाओं के नाम पर राशि जमा कराते थे।

पुलिस के अनुसार ठगी की रकम विभिन्न बैंक खातों और डिजिटल भुगतान माध्यमों के जरिए स्थानांतरित की जाती थी। आरोपी इस पूरे लेन-देन में सहयोग कर आर्थिक लाभ अर्जित करता था। मामले में इससे पहले चार अन्य आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है, जबकि लोकेश दो वर्ष से फरार चल रहा था।

कार्रवाई में थानाधिकारी सुनील कुमार गुप्ता, हेड कांस्टेबल हरिसिंह तथा कांस्टेबल अशोक की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पुलिस साइबर ठगी के नेटवर्क

से जुड़े अन्य आरोपियों की तलाश एवं मामले की गहन जांच में जुटी है।

04 वर्षीय मासूम शिवांश को मिली जन्मजात हृदय रोग से मुक्ति

राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम बना वरदान

जयपुर द्वितीय- 01 जुलाई- चिकित्सा विभाग का राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम बालक शिवांश के लिए वरदान सिद्ध हुआ है। पैदाईश हृदयरोग से जूझ रहे शिवांश को राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के प्रयासों की वजह से नया जीवन मिला है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनीष मित्तल ने बताया कि जन्मजात हृदय रोग से जूझ रहा 04 वर्षीय मासूम शिवांश जन्म के बाद से ही बीमार रहने लगा था। उसे साँस लेने में दिक्कत रहती थी। थोड़ा सा दौड़ने पर हाँफने लगता था। शिवांश दिन प्रतिदिन कमजोर होता जा रहा था। जोबनेर के अगरपुरा ग्राम निवासी पिता कजोड़मल ने उसे लेकर अस्पतालों के चक्कर लगाए पर बात नहीं बनी।

गत 26 फरवरी को जब राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम सांभर की मोबाईल हैल्थ टीम ÷बी÷ आंगनबाड़ी अगरपुरा (जोबनेर) में बच्चों की स्क्रीनिंग के लिए आई तो वहां उन्हें परीक्षण के दौरान शिवांश के हृदय की बीमारी के विषय में पता लगा। मोबाईल हैल्थ टीम के डॉ. कमल शर्मा, एएनएम मीनाक्षी चौधरी, गरिमा वर्मा ने उसे मानसरोवर स्थित

मंगलम मेडिसिटी अस्पताल में रैफर कर दिया। शिवांश के अभिभावकों को टीम ने हिम्मत बंधाई और समस्त ईलाज निःशुल्क होने के विषय में बताया।

शिवांश को गत 13 अप्रैल को मंगलम मेडिसिटी अस्पताल में भर्ती करवाया गया। आवश्यक परीक्षण के बाद 14 अप्रैल को डॉ. अभिमन्यु उप्पल व उनकी टीम ने बालक शिवांश का ऑपरेशन किया। ऑपरेशन सफल रहा और शिवांश को जन्मजात हृदय रोग की तकलीफ से मुक्ति मिल गई। चिकित्सकों की देखरेख में रहने के बाद उसे गत 15 अप्रैल को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। आज शिवांश बिना किसी तकलीफ के सामान्य बच्चों की तरह अपना जीवन बिता रहा है। शिवांश के पिता कजोड़मल और माता अनुराधा राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम, चिकित्सकों और राज्य सरकार के प्रति कृतज्ञ है, जिनके प्रयासों की वजह से शिवांश का ऑपरेशन निःशुल्क हुआ और उसे एक गंभीर रोग से मुक्ति मिल गई। इसमे सीएमएचओ डॉ. मनीष मित्तल, बीसीएमओ (सांभर) डॉ. राज चौधरी, एडीएनओ डॉ. दिलीप शर्मा, आरबीएसके मोबाईल हैल्थ टीम का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

2 जुलाई को जिले की 6 ग्राम पंचायतों में आयोजित होंगे ग्रामीण सेवा शिविर

रिपोर्टर - मुकेश मीना

खैरथल-तिजारा, एक जुलाई। राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं सेवाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के उद्देश्य से जिले में 12 जून से 15 जुलाई 2026 तक ÷ग्रामीण सेवा शिविर-2026÷ का आयोजन किया जा रहा है। जिला कलक्टर ने बताया कि ग्रामीण सेवा शिविरों में राजस्व विभाग सहित कुल 22 विभागों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।

2 जुलाई को तिजारा उपखंड की ग्राम पंचायत जोजाका स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, उपखंड कोटकासिम की ग्राम पंचायत उजौली स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, उपखंड किशनगढ़ बास की ग्राम पंचायत मांचा स्थित अटल सेवा केंद्र, उपखंड टपूकड़ा की ग्राम पंचायत झीवाना स्थित अटल सेवा केंद्र, उपखंड मुंडावर की ग्राम पंचायत गादूवास, बासनी स्थित अटल सेवा केंद्रों पर ग्रामीण सेवा शिविर आयोजित किए जाएंगे।

ग्रामीण सेवा शिविरों के माध्यम से आमजन की विभिन्न समस्याओं का त्वरित समाधान, राजस्व प्रकरणों का निस्तारण, पात्र व्यक्तियों को योजनाओं का लाभ प्रदान करना तथा विभिन्न विभागीय सेवाओं की प्रभावी पहुंच सुनिश्चित की जाएगी। जिला प्रशासन ने सभी विभागों को शिविरों के सफल संचालन हेतु आवश्यक तैयारियां समय पर पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं।

सफलता की कहानी प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) से मिला पक्का आशियाना, कमला का सपना हुआ साकार

रिपोर्टर - मुकेश मीना

खैरथल-तिजारा। राज्य सरकार एवं पंचायत राज विभाग द्वारा आयोजित ग्रामीण सेवा शिविर-2026 के माध्यम से पात्र परिवारों को विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रदान किया जा रहा है। इन्हीं प्रयासों के तहत ग्राम असलीमपुर, ग्राम पंचायत विराटपुर की निवासी कमला पत्नी फूल सिंह को प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत पक्का आवास प्राप्त हुआ। योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के पात्र परिवारों को सुरक्षित एवं सम्मानजनक आवास उपलब्ध कराना है। कमला बताती हैं कि पहले उनका परिवार कच्चे मकान में रहता था, जहाँ बरसात और अन्य मौसमों में कई प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता था। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत आवास स्वीकृत होने के बाद उनका पक्का घर बनकर तैयार हुआ और अब वे अपने परिवार के साथ सुरक्षित एवं सम्मानपूर्वक जीवन जी रही हैं।

उन्होंने बताया कि नए घर की चाबी मिलने से उनके परिवार को स्थायी आश्रय मिला है तथा बच्चों के भविष्य के लिए भी एक सुरक्षित वातावरण तैयार हुआ है। अब उन्हें मौसम की मार

और असुरक्षा की चिंता नहीं रहती।

कमला ने इस सहायता के लिए राजस्थान सरकार, पंचायती राज विभाग तथा ग्रामीण सेवा शिविर में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह योजना उनके परिवार के जीवन में सकारात्मक बदलाव लेकर आई है। उन्होंने अन्य पात्र ग्रामीणों से भी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाने की अपील की।ना, कमला का सपना हुआ साकार खैरथल-तिजारा। राज्य सरकार एवं पंचायत राज विभाग द्वारा आयोजित ग्रामीण सेवा शिविर-2026 के माध्यम से पात्र परिवारों को विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रदान किया जा रहा है। इन्हीं प्रयासों के तहत ग्राम असलीमपुर, ग्राम पंचायत विराटपुर की निवासी कमला पत्नी फूल सिंह को प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत पक्का आवास प्राप्त हुआ। योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के पात्र परिवारों को सुरक्षित एवं सम्मानजनक आवास उपलब्ध कराना है।

कमला बताती हैं कि पहले उनका परिवार कच्चे मकान में रहता था, जहाँ बरसात और अन्य मौसमों में कई प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता था। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत आवास स्वीकृत होने के बाद उनका पक्का घर बनकर तैयार हुआ और अब वे अपने परिवार के साथ सुरक्षित एवं सम्मानपूर्वक जीवन जी रही हैं।

उन्होंने बताया कि नए घर की चाबी मिलने से उनके परिवार को स्थायी आश्रय मिला है तथा बच्चों के भविष्य के लिए भी एक सुरक्षित वातावरण तैयार हुआ है। अब उन्हें मौसम की मार और असुरक्षा की चिंता नहीं रहती।

कमला ने इस सहायता के लिए राजस्थान सरकार, पंचायती राज विभाग तथा ग्रामीण सेवा शिविर में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह योजना उनके परिवार के जीवन में सकारात्मक बदलाव लेकर आई है। उन्होंने अन्य पात्र ग्रामीणों से भी सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाने की अपील की।

मेरा युवा भारत की जिला स्तरीय चयन समिति में रमेश कुमार नामित

रिपोर्टर -मुकेश मीना

खैरथल-तिजारा। भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के अंतर्गत संचालित मेरा युवा भारत (MY Bharat) द्वारा खैरथल-तिजारा निवासी रमेश कुमार को राष्ट्रीय युवा कोर (NYC) योजना के तहत MY Bharat Youth Volunteers के चयन के लिए गठित जिला स्तरीय चयन समिति का सदस्य नामित किया गया हैद्यजारी आदेश के अनुसार जिला स्तरीय चयन समिति प्रत्येक विकासखंड से दो-दो योग्य युवाओं का चयन कर उनकी अनुशंसा करेगी। जिला युवा अधिकारी (DYO) को निर्देश दिए गए हैं कि वे समिति के

फोटो - रमेश कुमार

सदस्यों से संपर्क कर MY Bharat की पहल, NYC योजना तथा युवा स्वयंसेवकों की भूमिका एवं जिम्मेदारियों की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराएं उप निदेशक देवेंद्र व्यास द्वारा जारी पत्र में समिति से समर्पित एवं ऊर्जावान युवाओं के चयन में सहयोग का आग्रह किया गया है, ताकि भविष्य में वे प्रभावी युवा नेतृत्व के रूप में उभर सकें

हरियाली - पौधे लगाने में नंबर वन, बचाने में शून्य; मानसून के बाद अनाथ हो रहे पौधे

जगमाल सिंह प्रजापति नीमराना

मानसून की पहली फुहार पड़ते ही क्षेत्र में वृक्षारोपण (पेड़-पौधे लगाने) का दौर बड़े जोर-शोर से शुरू हो जाता है। नेता, प्रशासनिक अधिकारी, सामाजिक संस्थाएं और आम लोग हाथों में खुरपी और नन्हे पौधे लेकर चमचमाती तस्वीरें खिंचवाते नजर आते हैं। सोशल मीडिया पर %पर्यावरण प्रेम% की बाढ़ आ जाती है। लेकिन कड़वा सच यह है कि इन पौधों की उम्र सिर्फ उसी फोटो खिंचवाने वाले पल तक ही सीमित रह जाती है। पौधा रोपने के बाद उनकी सुध लेने वाला कोई नहीं होता, जिसके चलते कुछ ही हफ्तों में ये पौधे रख-रखाव और पानी के अभाव में दम तोड़ देते हैं।

सिर्फ रस्म अदायगी बनकर रह गया वृक्षारोपण

हर साल मानसून के मौसम में हजारों-लाखों पौधे लगाने का दावा किया जाता है। सरकारी विभागों से लेकर निजी संस्थाओं तक, लाखों का बजट इस अभियान में झोंक दिया जाता है। लेकिन धरातल पर स्थिति बिल्कुल उलट है *लावारिस छोड़ दिए जाते हैं पौधे- रोपने के बाद न तो पौधों की ट्री-गार्ड (सुरक्षा कवच) से घेराबंदी की जाती है और न ही उनमें नियमित पानी देने की व्यवस्था होती है। मवेशी चबा जाते हैं उम्मीदें- सुरक्षा न होने के कारण आवारा पशु इन कोमल पौधों को खा जाते हैं या कुचल देते हैं।परवरिश बिना सब सूना- पौधा लगाना आसान, पेड़ बनाना मुश्किल पर्यावरण विशेषज्ञों का साफ कहना है कि एक पौधे को लगाने में जितनी मेहनत लगती है, उससे दस गुना ज्यादा मेहनत उसकी कम से कम 3 साल तक देखभाल करने में लगती है। जब तक कोई पौधा आत्मनिर्भर (बड़ा) नहीं हो जाता, उसे एक नवजात बच्चे की तरह परवरिश की जरूरत होती है। लेकिन यहाँ %लगाओ और भूल जाओ% की नीति चल रही है।

संग्राम सिंह किनसरिया की प्रथम पुण्यतिथि पर 7 जुलाई को होगा विशाल रक्तदान शिविर, पोस्टर का हुआ विमोचन

महेश चंद सैनी परबतसर

परबतसर। संग्राम सिंह किनसरिया की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर 7 जुलाई को किनसरिया गांव में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। आयोजन की तैयारियों के तहत मंगलवार को परबतसर में रक्तदान शिविर के पोस्टर का विमोचन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित वक्ताओं ने कहा कि रक्तदान महादान है और इससे जरूरतमंद मरीजों को नया जीवन मिलता है। उन्होंने युवाओं एवं आमजन से अधिक से अधिक संख्या में रक्तदान शिविर में भाग लेकर मानव सेवा के इस पुनीत कार्य में योगदान देने का आह्वान किया। पोस्टर विमोचन कार्यक्रम में दौलत सिंह चिंटू सिंह, राकेश सिंह, कैलाश मेघवाल, दिनेश कुमार व्यास, किशनाराम कच्छावा, पन्नालाल माली, सूरजमल माली, किशनलाल माली तथा बाबूलाल सांखला सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। आयोजन समिति ने बताया कि शिविर की सभी तैयारियां अंतिम चरण में हैं तथा बड़ी संख्या में रक्तदाताओं के पहुंचने की उम्मीद है।

संदिग्ध परिस्थितियों में ट्रक चालक की मौत

जिले के एनईबी थाना क्षेत्र के मुंगस्का निवासी 38 वर्षीय ट्रक चालक की कथित रूप से जहरीले पदार्थ के सेवन से मौत हो गई। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार घटना के समय वह शराब के नशे में था। पुलिस मामले की जांच कर रही है कि उसने जहरीला पदार्थ जानबूझकर सेवन किया था या यह दुर्घटनावश हुआ। जानकारी के अनुसार मुंगस्का निवासी रजाक पुत्र सुभान खान ट्रक चालक था और लंबे समय से शराब का सेवन करता था। रविवार शाम उसने कथित रूप से जहरीली दवा पी ली, जिससे उसकी तबीयत अचानक बिगड़ गई। परिजन उसे तत्काल उपचार के लिए अलवर के एक निजी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां इलाज के दौरान रविवार देर रात उसकी मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस अस्पताल पहुंची और आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के बाद शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया। रजाक अपने परिवार का एकमात्र कमाने वाला सदस्य था। पिता की असमय मौत से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है और उनके सामने आजीविका का भी गंभीर संकट खड़ा हो गया है। एनईबी थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि जहरीले पदार्थ का सेवन आत्महत्या के इरादे से किया गया था या किसी अन्य परिस्थिति में यह घटना हुई।

संग्राम सिंह किनसरिया की प्रथम पुण्यतिथि पर 7 जुलाई को होगा विशाल रक्तदान शिविर, पोस्टर का हुआ विमोचन

महेश चंद सैनी परबतसर

परबतसर। संग्राम सिंह किनसरिया की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर 7 जुलाई को किनसरिया गांव में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। आयोजन की तैयारियों के तहत मंगलवार को परबतसर में रक्तदान शिविर के पोस्टर का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित वक्ताओं ने कहा कि रक्तदान महादान है और इससे जरूरतमंद मरीजों को नया जीवन मिलता है। उन्होंने युवाओं एवं आमजन से अधिक से अधिक संख्या में रक्तदान शिविर में भाग लेकर मानव सेवा के इस पुनीत कार्य में योगदान देने का आह्वान किया। पोस्टर विमोचन कार्यक्रम में दौलत सिंह चिंटू सिंह, राकेश सिंह, कैलाश मेघवाल, दिनेश कुमार व्यास, किशनाराम कच्छावा, पन्नालाल माली, सूरजमल माली, किशनलाल माली तथा बाबूलाल सांखला सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। आयोजन समिति ने बताया कि शिविर की सभी तैयारियां अंतिम चरण में हैं तथा बड़ी संख्या में रक्तदाताओं के पहुंचने की उम्मीद है।

मनाना ग्राम के शौचालयों की सफ़ाई व्यवस्था बदहाल..

राजवीर सिंह मनाना

मकराना 7 मकराना के निकटवर्ती ग्राम मनाना में सार्वजनिक एवं सामुदायिक शौचालयों की सफ़ाई व्यवस्था पूरी तरह चरमराई हुई है। नियमित सफ़ाई नहीं होने के कारण शौचालयों से गंदा पानी और मल-मूत्र सड़कों पर बहकर फैल रहा है, जिससे ग्रामीणों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि लंबे समय से शौचालयों की सफ़ाई नहीं की गई है। नालियों की उचित व्यवस्था नहीं होने तथा सफ़ाई कर्मचारियों की अनियमितता के कारण गंदगी लगातार बढ़ती जा रही है। सड़कों पर फैली गंदगी से दुर्गंध फैल रही है और संक्रामक बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। गांव के लोगों ने संबंधित अधिकारियों और ग्राम पंचायत से जल्द सफ़ाई व्यवस्था दुरुस्त करने, शौचालयों की नियमित सफ़ाई कराने तथा गंदे पानी की निकासी की समुचित व्यवस्था करने की मांग की है।

भाजयुमो राजस्थान के डिजिटल प्रशिक्षण अभियान में मकराना से अजय सिंह पवांर को बड़ी जिम्मेदारी

राजवीर सिंह मनाना

मकराना। भारतीय जनता युवा मोर्चा (भाजयुमो), राजस्थान द्वारा संगठन को डिजिटल रूप से सशक्त और मजबूत बनाने के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत नई नियुक्तियों की घोषणा की गई है। भारतीय जनता पार्टी राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ के निर्देशानुसार एवं भाजयुमो राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष शंकर गोरा के नेतृत्व में ÷डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रशिक्षण अभियान÷ के तहत विधानसभा स्तरीय जिम्मेदारी सौंपी गई है।

इसी क्रम में नागौर जिले की मकराना विधानसभा से अजय सिंह पवांर को विधानसभा संयोजक नियुक्त किया गया है।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य मकराना विधानसभा क्षेत्र के युवाओं को डिजिटल लर्निंग टूल्स के माध्यम से जोड़ना, उन्हें प्रशिक्षित करना और संगठन की राष्ट्रवादी नीतियों को जमीनी स्तर तक पहुँचाना है। अजय सिंह पवांर की इस नियुक्ति पर स्थानीय कार्यकर्ताओं, समर्थकों और वरिष्ठ नेताओं ने खुशी जाहिर करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं दी हैं।

भारत के खिलाफ पहले टी20 के लिए इंग्लैंड ने घोषित की प्लेइंग-11

इंग्लैंड ने भारत के खिलाफ बुधवार को होने वाले पांच मैचों की टी20 सीरीज के पहले मुकाबले के लिए अपनी प्लेइंग-11 घोषित कर दी है। 2026 टी20 विश्व कप के सेमीफाइनल में भारत से हारने वाली इंग्लैंड टीम की तुलना में इस बार अंतिम एकादश में दो बड़े बदलाव किए गए हैं। साकिब महमूद को जेमी ओवरटन की जगह शामिल किया गया है, जबकि जोफ्रा आर्चर की जगह ल्यूक वुड की टीम में वापसी हुई है। जोफ्रा आर्चर और तेज गेंदबाज जोश टंग को हाल ही में न्यूजीलैंड के खिलाफ खेले गए आखिरी टेस्ट मैच में शामिल होने के कारण इस सीरीज के लिए आराम दिया गया है।

हैरी ब्रूक के लिए बड़ी परीक्षा

इस सीरीज में स्टार बल्लेबाज हैरी ब्रूक टीम की कमान संभाल रहे हैं, जो उनके अब तक के कप्तानी करियर की सबसे कठिन चुनौतियों में से एक होने वाली है। टी20 विश्व कप के सेमीफाइनल में टीम को पहुंचाकर ब्रूक ने अपनी साख मजबूत की है और उन्हें इंग्लैंड के अगले टेस्ट कप्तान के रूप में भी देखा जा रहा है। ब्रूक ने कहा, मैंने खुद को पूरी तरह से इंग्लैंड क्रिकेट के लिए समर्पित कर दिया है। मैंने साफ कर दिया है कि मैं द हंड्रेड को छोड़कर किसी भी अन्य फ्रेंचाइजी क्रिकेट में नहीं खेलना चाहता। मैं जो कुछ भी करना चाहता हूं, वह इंग्लैंड के लिए क्रिकेट खेलना है। मैदान पर या मैदान से बाहर मेरा हर कदम सिर्फ इसलिए होता है ताकि मैं इंग्लैंड के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकूं।

फ्रेंचाइजी क्रिकेट से दूरी बनाने के फायदे बताते हुए ब्रूक ने कहा, फ्रेंचाइजी क्रिकेट न खेलने का मतलब है कि मेरे कैलेंडर में कुछ ऐसा समय होता है जब मैं क्रिकेट नहीं खेल रहा होता। उस दौरान मैं अपनी फिटनेस पर ध्यान केंद्रित करता हूं और खुद को तीनों फॉर्मेट (टेस्ट, वनडे, टी20) खेलने के लिए तैयार करता हूं। तीनों प्रारूप में देश का प्रतिनिधित्व करना मेरा सपना रहा है। भविष्य में मैं टेस्ट क्रिकेट का कप्तान बनूं या न बनूं, मैं इंग्लैंड के लिए खेलकर ही बेहद खुश रहूंगा।

हार्दिक ने सीओई को क्यों बनाया अपना स्थायी ट्रेनिंग केंद्र?

चोट से उबर रहे भारतीय ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या ने बड़ा फैसला लिया है। वह बंगलूरू में शिफ्ट हो गए हैं और अपने करियर के शेष समय तक भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (सीओई) में ही ट्रेनिंग करेंगे। हार्दिक ने सीओई को अपना स्थायी ट्रेनिंग केंद्र बनाने के मकसद से बंगलूरू में रहने का फैसला किया है। वह ऐसा करने वाले भारत के मौजूदा प्रमुख क्रिकेटर हैं।

इंग्लैंड दौरे से हैं बाहर

हार्दिक का यह कदम इसलिए सभी का ध्यान खींच रहा है क्योंकि भारत के केंद्रीय अनुबंधित खिलाड़ी आम तौर पर चोट से उबरने (रिहैबिलिटेशन), फिटनेस परीक्षण या राष्ट्रीय शिविर के लिए ही सीओई जाते हैं। हार्दिक मूल रूप से गुजरात के बड़ौदा के रहने वाले हैं, लेकिन उन्होंने पिछले दशक में अधिकतर समय मुंबई में बिताया है और मुख्य रूप से अपनी आईपीएल टीम मुंबई इंडियंस की घंसोली स्थित सुविधा में ट्रेनिंग की है। अभी जांघ की चोट से उबर रहे 32 वर्षीय हार्दिक ब्रिटेन के सीमित ओवरों के मौजूदा दौरे से बाहर हो गए थे। उन्होंने पिछले छह महीने में सीओई में काफी समय बिताया है।

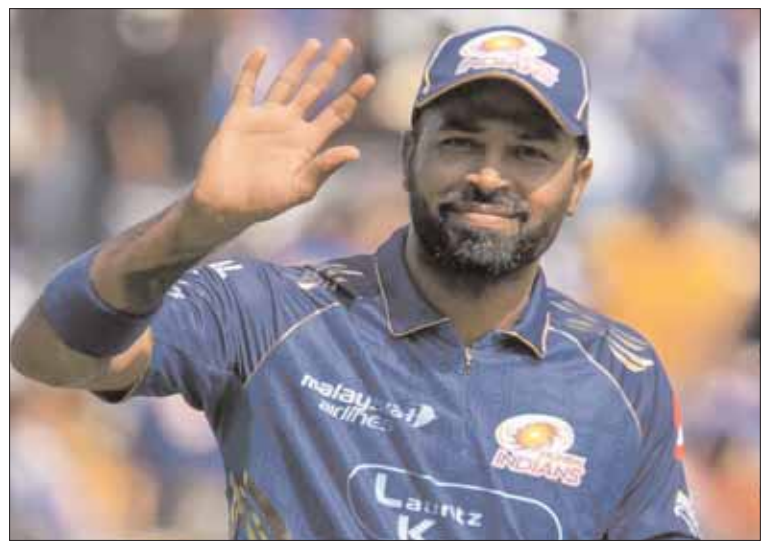

बीसीसीआई के एक सूत्र ने कहा, हार्दिक पहले ही स्थायी रूप से बंगलूरू स्थानांतरित हो चुके हैं। उन्होंने शहर के बाहरी इलाके में सीओई के पास एक संपत्ति किराए पर ली है। वह अपने करियर के बाकी समय के लिए सीओई को अपना स्थायी ट्रेनिंग केंद्र बनाने वाले पहले भारतीय क्रिकेटर होंगे। हार्दिक मुंबई से बाहर जाना चाहते थे क्योंकि ट्रेनिंग के लिए रोजाना अपने लोअर परेल स्थित घर से आना-जाना एक समस्या बन गई थी। केंद्रीय अनुबंध वाले क्रिकेटर के तौर पर उन्हें सीओई में चोट के इलाज से लेकर कौशल ट्रेनिंग तक सभी सुविधाएं मिलेंगी। इसलिए जब भी वह आईपीएल, राज्य या राष्ट्रीय टीम के साथ नहीं हों तो उन्होंने सीओई को अपना स्थायी आधार बनाने का फैसला किया है।

माना जा रहा है कि हार्दिक के पास अपने फिजियोथेरेपिस्ट और निजी स्ट्रेंथ एवं अनुकूलन कोच भी होंगे जो सीओई के बाहर ट्रेनिंग में उनकी मदद करेंगे। सूत्र ने कहा, यह जब तक वह भारत के लिए सीमित ओवरों का क्रिकेट खेलते हैं तब तक बंगलूरू में बसने जैसा है और उनका इरादा कम से कम अगले पांच से छह साल तक खेलने का है। यहां तक कि जब वह अपने कौशल पर काम करते हैं, जैसे सीओई द्वारा नियुक्त किए गए नेट गेंदबाजों के खिलाफ बल्लेबाजी करना तो हार्दिक उन्हें अपनी जेब से पैसे देते हैं।

माना जा रहा है कि पांड्या की चोट से उबरने की प्रक्रिया जारी है। उन्होंने निजी काम के लिए कुछ दिनों की छुट्टी ली है और उम्मीद है कि वह एक-दो दिन में सीओई लौट आएंगे। हालांकि यह साफ नहीं है कि खेलने के लिए वापसी प्रोटोकॉल पूरे करने के बाद फिट घोषित किए जाने पर उन्हें ब्रिटेन दौरे के ठीक बाद जिम्बाब्वे के खिलाफ होने वाली तीन मैच की टी20 अंतरराष्ट्रीय सीरीज के लिए चुना जाएगा या नहीं।

15 साल के वैभव सूर्यवंशी पर सरनदीप सिंह ने जताया भरोसा

पूर्व भारतीय चयनकर्ता सरनदीप सिंह का मानना है कि 15 वर्षीय युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी को इंग्लैंड के खिलाफ डरहम में खेले जाने वाले पहले टी20 मुकाबले में भारतीय प्लेइंग इलेवन का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। उनके अनुसार, अगर भारत भविष्य की टीम तैयार करना चाहता है तो टीम मैनेजमेंट को रोटेशन पॉलिसी अपनाते हुए युवा खिलाड़ियों को अवसर देना होगा।

वैभव सूर्यवंशी को इससे पहले आयरलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज में खेलने का मौका नहीं मिला था, जिसमें विश्व चैंपियन भारत को 0-2 से हार का सामना करना पड़ा। यदि उन्हें इंग्लैंड के खिलाफ पहले टी20 में मौका मिलता है, तो वह भारत के लिए टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी बन जाएंगे।

रोटेशन पॉलिसी अपनाने की सलाह

दिल्ली प्रीमियर लीग (डीपीएल) नीलामी के दौरान पीटीआई से बातचीत में सरनदीप सिंह ने कहा, %उन्हें आयरलैंड के खिलाफ खेलना चाहिए था। टीम मैनेजमेंट को यह देखना होगा कि उन्हें प्लेइंग इलेवन में कैसे फिट किया जाए। कभी-कभी कठिन फैसले लेने पड़ते हैं। कुछ वरिष्ठ खिलाड़ियों को आराम देकर उन्हें मौका दिया जा सकता है।% उन्होंने आगे कहा, %अगर आप भविष्य की टीम तैयार कर रहे हैं तो रोटेशन पॉलिसी लागू करनी होगी। कुछ खिलाड़ियों को बाहर बैठाना पड़ेगा ताकि युवा खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिल सके।

शानदार फॉर्म में हैं वैभव सूर्यवंशी

15 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी हाल के महीनों में लगातार शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने पहले आईपीएल में अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी से सभी का ध्यान खींचा और उसके बाद श्रीलंका दौरे पर भारत-ए की ओर से सिर्फ 29 गेंदों में 94 रन की मैच जिताऊ पारी खेली।

सरनदीप का मानना है कि यही सही समय है जब उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर

आजमाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, %उन्हें अब और बाहर मत रखिए। अगर मौका है तो सीधे प्लेइंग इलेवन में खिलाइए। जिस तरह की फॉर्म में वह हैं, यह उनके करियर की शुरुआत करने का सबसे सही समय है। जिस अंदाज में वह बल्लेबाजी कर रहे हैं, वह अकेले दम पर मैच जिता सकते हैं।

आईपीएल मैचों के लिए अंपायर को कितने रुपये मिलते हैं?

आईपीएल में अंपायरों की कमाई को लेकर अक्सर सवाल उठते हैं, लेकिन अब इस पर बड़ा खुलासा हुआ है। पूर्व अंतरराष्ट्रीय अंपायर अनिल चौधरी ने बताया कि इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में एक अंपायर सिर्फ एक सीजन में 45 से 50 लाख रुपये तक कमा सकता है। इतना ही नहीं, फाइनल मुकाबले में अंपायरिंग करने वाले अधिकारियों को 8000 डॉलर तक का भुगतान किया जाता है। 2025 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट और आईपीएल से संन्यास लेने वाले चौधरी ने हाल ही में एक पॉडकास्ट में अंपायरों की कमाई और भुगतान व्यवस्था को लेकर विस्तार से जानकारी साझा की।

क्या प्लेऑफ और फाइनल में अंपायरों की फीस और बढ़ जाती है?

अनिल चौधरी ने कहा कि एक मैच के लिए 4000 डॉलर मिलते हैं। अगर प्लेऑफ में अंपायरिंग करते हैं तो 6000 डॉलर और फाइनल के लिए 8000 डॉलर दिए जाते हैं। इसके अलावा डेली अलाउंस (डीए) भी मिलता है। औसतन आईपीएल में अंपायरिंग करने वाला अंपायर एक सीजन में करीब 45 से 50 लाख रुपये कमा लेता है। अगर कोई घरेलू क्रिकेट में भी शीर्ष अंपायरों में शामिल है तो वहां से 20 से 25 लाख रुपये की अतिरिक्त कमाई हो जाती है।

क्या टेस्ट और टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में भी तय होती है अंपायरों की फीस?

अनिल चौधरी ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अंपायरों को मिलने वाली फीस का भी खुलासा किया। उन्होंने बताया कि एक टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले के लिए करीब दो लाख रुपये और एक टेस्ट मैच के लिए लगभग आठ लाख रुपये मिलते हैं। उन्होंने कहा कि मैच रद्द हो जाए या पूरा न खेला जाए, इससे अंपायर की फीस पर कोई असर नहीं पड़ता। अंपायर को तय भुगतान हर हाल में मिलता है।

क्या धोनी रिव्यू सिस्टम भी कभी हुआ था गलत साबित?

अनिल चौधरी ने महेंद्र सिंह धोनी की खास तौर पर तारीफ करते हुए उन्हें डीआरएस का मास्टर बताया। उन्होंने कहा कि विकेट के पीछे उनकी बेहतरीन पोजिशनिंग, गेंद की लाइन को समझने की क्षमता और शांत स्वभाव उन्हें रिव्यू लेने के मामले में सबसे भरोसेमंद कप्तान बनाता था। हालांकि, चौधरी ने यह भी बताया कि एक ऐसा दुर्लभ मौका भी आया था, जब चर्चित %धोनी रिव्यू सिस्टम% भी सही फैसला नहीं दिला पाया था। उनके मुताबिक, अपनी शानदार सटीकता के बावजूद धोनी से भी कभी-कभी निर्णय लेने में चूक हो जाती थी।

सेमीफाइनल से पहले इंग्लैंड को मिली बड़ी राहत

महिला टी20 विश्व कप 2026 का दूसरा सेमीफाइनल गुरुवार को मेजबान इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका के बीच खेला जाना है। सेमीफाइनल से पहले इंग्लैंड के लिए अच्छी खबर यह है कि टीम की कप्तान नट सिवर ब्रंट को फिट घोषित कर दिया गया है। सिवर ब्रंट ने बुधवार को द ओवल में मैच से पहले आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्लेइंग इलेवन में अपनी वापसी की पुष्टि कर दी।

ब्रंट की वापसी से इंग्लैंड को मिलेगी मजबूती

ब्रंट ने कहा, %हमने सच में अपना सब कुछ झोंक दिया। मैं शारीरिक रूप से जहां हूं, उससे बहुत खुश हूं। मेडिकल टीम खुश है। मैं पूरे गेम में हिस्सा ले पा रही हूं। मैं बहुत खुश हूं।% सिवर ब्रंट की वापसी से इंग्लैंड की प्लेइंग इलेवन को मजबूती मिली है। उनकी मौजूदगी से टीम को एक गेंदबाजी का विकल्प भी मिलता है, जिससे टीम में संतुलन आता है। साउथैम्प्टन में आयरलैंड के खिलाफ मैच के दौरान सिवर ब्रंट रिटायर्ड हर्ट हो गई थीं। उससे पहले ब्रंट अप्रैल के आखिर में घरेलू क्रिकेट खेलते समय चोटिल हो गई थीं और इस वजह से भारत और न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज नहीं खेल पाई थीं। ब्रंट ने टूर्नामेंट से पहले दोनों अभ्यास मैच खेले थे। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उन्होंने तीन, जबकि भारत के खिलाफ 57 रन बनाए थे। इसके बाद विश्व कप में श्रीलंका और आयरलैंड के खिलाफ क्रमशः 46 और 48 रन बनाए।

इंग्लैंड अपने सभी पांच ग्रुप मैच जीतकर सेमीफाइनल में पहुंची है। कप्तान ब्रंट की वापसी से पहले से ही मजबूत टीम और भी बेहतर हो गई है। इंग्लैंड की सबसे बड़ी ताकत उनका शीर्ष क्रम है, जिसे टूर्नामेंट की शीर्ष स्कोरर डैनी वायट-हॉज लीड कर रही हैं। अनुभवी ओपनर ने पांच पारियों में 94 की औसत से 282 रन बनाए हैं। इसमें द ओवल में न्यूजीलैंड के खिलाफ नाबाद 89 रन की पारी शामिल हैं। उन्हें पहले ही तीन प्लेयर ऑफ द मैच अवॉर्ड मिल चुके हैं।

देर रात शुरू होगा भारत-इंग्लैंड के बीच पहला टी20

वैभव सूर्यवंशी का बहुप्रतीक्षित डेब्यू और मुश्किल विकेटों पर बल्लेबाजी की कमजोरियां इंग्लैंड के खिलाफ बुधवार से शुरू हो रही पांच मैच की टी20 सीरीज में भारत के लिए चर्चा का मुख्य विषय रहेंगे। भारत को आयरलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज में हार का सामना करना पड़ा था जिसके बाद वैभव को प्लेइंग-11 में शामिल करने की मांग तेज हो गई थी। हालांकि, टीम प्रबंधन की ओर से जो संकेत मिल रहे हैं उससे इस बात की संभावना कम है कि इस 15 साल के बल्लेबाज को पहले टी20 में मौका मिले।

वैभव के लिए सैमसन होंगे ड्रॉप?

अगर सैमसन को देखें तो उन्होंने इस साल टी20 विश्व कप के अंतिम चरण के मुकाबलों में शानदार प्रदर्शन किया था और आईपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स के लिए दो शतक भी लगाए थे। हालांकि चयन समिति के अध्यक्ष अजित अगरकर और मुख्य कोच गौतम गंभीर की अगुआई वाला टीम प्रबंधन कड़े फैसले लेने से पीछे नहीं हटता और जिन्हें शक है वे सूर्यकुमार यादव का उदाहरण देख सकते हैं। उन्होंने आयरलैंड के खिलाफ सूर्यांश शेडगे और प्रिंस यादव को डेब्यू का मौका दिया जिससे सूर्यवंशी को अंतरराष्ट्रीय डेब्यू के लिए इंतजार करना पड़ा। हालांकि सिर्फ सूर्यवंशी को टीम में शामिल करने से भारत की बल्लेबाजी की समस्याओं का तुरंत समाधान नहीं हो जाएगा क्योंकि इन समस्याओं के कई पहलू हैं।

इंग्लैंड में आयरलैंड जैसी ही होगी परिस्थिति

भारतीय बल्लेबाजों को अपनी सोच और खेलने के तरीके में बदलाव करना होगा क्योंकि इंग्लैंड में भी लगभग आयरलैंड जैसे ही हालात होंगे और वहां अधिक बेहतर और अनुभवी खिलाड़ियों से सामना होगा। इंग्लैंड के पास जोफा आर्चर, जोश टंग, साकिब महमूद और सोनी बेकर जैसे बहुत तेज गति वाले गेंदबाज हैं और आदिल रशीद तथा रेहान अहमद जैसे चतुर स्पिन गेंदबाज भी हैं। रिवरसाइड ग्राउंड पर औसत टी20 अंतरराष्ट्रीय स्कोर 138 और उच्चतम स्कोर 195 है जो यहां खेले गए पिछले आठ मैच में गेंदबाजों के दबदबे की ओर इशारा करता है। इसलिए अगर बल्लेबाज विरोधी टीम की गेंदबाजी और यहां की पिचों के हिसाब से ढलने में अधिक समय लेते हैं तो इंग्लैंड बहुत तेजी से पांच मैच की सीरीज जीत सकता है। भारत के नए टी20 कप्तान श्रेयस अय्यर निश्चित रूप से लगातार दूसरी सीरीज हारना नहीं चाहेंगे। भारत और इंग्लैंड के बीच टी20 सीरीज का प्रसारण अधिकार सोनी स्पोर्ट्स के पास है और दर्शक इसके मुकाबले सोनी के स्पोर्ट्स के चैनलों पर देख सकेंगे।

खुद को टी20 टीम की कमान मिलने से श्रेयस अय्यर को नहीं हुआ आश्चर्य

भारतीय टी20 टीम के नवनियुक्त कप्तान श्रेयस अय्यर ने कहा है कि खेल के सबसे छोटे प्रारूप में उन्हें टीम की कमान सौंपा जाना उनके लिए बिल्कुल भी हैरान करने वाला फैसला नहीं था। अय्यर को विश्व कप विजेता कप्तान सूर्यकुमार यादव की जगह यह जिम्मेदारी दी गई है। सूर्यकुमार को आईपीएल 2026 सीजन के बाद टीम से पूरी तरह से बाहर कर दिया गया था। इसके साथ ही श्रेयस अय्यर को इस साल होने वाले एशियाई खेलों के लिए भी भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम का कप्तान बनाया गया है।

कप्तानी मिलने पर क्या बोले श्रेयस अय्यर?

भले ही श्रेयस अय्यर का आईपीएल में बतौर कप्तान रिकॉर्ड शानदार रहा हो, लेकिन सूर्यकुमार यादव की जगह उन्हें कप्तान बनाए जाने की उम्मीद बहुत कम लोगों को थी। अय्यर पिछले तीन वर्षों से भारतीय टी20 टीम का हिस्सा नहीं थे। उन्हें विश्व कप से ठीक पहले टीम में वापस लाया गया था, लेकिन मुख्य टूर्नामेंट के लिए टीम में जगह नहीं दी गई थी। इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की टी20 सीरीज से पहले श्रेयस ने बीसीसीआई डॉट टीवी से कहा, ईमानदारी से कहूं तो यह कोई चौंकाने वाला फैसला नहीं है। मुझे किसी न किसी मोड़ पर इसकी उम्मीद थी। मैंने पिछले आईपीएल में और जब भी देश का प्रतिनिधित्व किया है, शानदार प्रदर्शन किया है। इसलिए यह मेरे लिए सरप्राइज नहीं था। लेकिन साथ ही, मुझे लगता है कि यह मेरे लिए उन सभी लोगों से सीखने का एक शानदार मौका है जो टी20 विश्व कप विजेता टीम का हिस्सा रहे हैं, जिसमें टीम मैनेजमेंट, सपोर्ट स्टाफ और कुछ अनुभवी खिलाड़ी शामिल हैं।

कप्तानी मिलने की खुशी जताते हुए अय्यर ने कहा, एक बच्चे के रूप में आप हमेशा भारतीय टीम के लिए खेलने का सपना देखते हैं। अब आप भारतीय टीम का नेतृत्व कर रहे हैं। मुझे लगता है कि यह सोने पर सुहागा जैसा है। यह मेरे लिए पूरी दुनिया है। यह निश्चित रूप से उस कड़ी मेहनत का परिणाम है जो आपने की है और जो समर्थन आपको प्रशंसकों, परिवार और दोस्तों से मिला है।

श्रेयस अय्यर की कप्तानी के सफर की शुरुआत बेहद निराशाजनक रही है। भारत को हाल ही में आयरलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज में 0-2 से हार का सामना करना पड़ा। यह भारत की आयरलैंड के खिलाफ इतिहास की पहली द्विपक्षीय सीरीज हार है और पिछले तीन वर्षों में टी20 में भारत की पहली सीरीज हार भी है। हालांकि, अय्यर ने स्पष्ट किया कि वह दबाव में बिखरने वाले नहीं हैं। श्रेयस ने कहा, बिना रुके दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ना है। कोई दबाव नहीं है, लेकिन साथ ही यह चुनौतीपूर्ण होने वाला है। मैं बस इस चुनौती को स्वीकार करना चाहता हूं। जैसा कि मैंने पहले कहा कि यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। मैं चाहता हूं कि चीजें चुनौतीपूर्ण हों, क्योंकि मैं दबाव में ही सबसे बेहतर निखरता हूं।

स्वामी,मुद्रक,प्रकाशक हरिओम शर्मा के लिए श्रीराम ऑफसेट 6, शॉपिंग सेन्टर, माधोविलास के सामने, जोरावर सिंह गेट के पास, आमेर रोड, जयपुर - 302002 (राज.) से मुद्रित, प्लाट नम्बर 10 माँ भवानी विस्तार नगर , विजयपुरा, आगरा रोड़ पुरानी चुंगी जयपुर राज. 302031 से प्रकाशित । संपादक - हरिओम शर्मा, मो. 9352862449,8058314720, Mail- brahmoskanayasavera@gmail.com